



3-6x 152K
 7322
 152K

बापू की बातें

मस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

2049

ਗਾਨ ਦੀ ਗਾਏ

[illegible]

गांधीजी के जीवन की शिक्षाप्रद घटनाएं

लेखक

विष्णु प्रभाकर

१९६९

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

362
152K9V

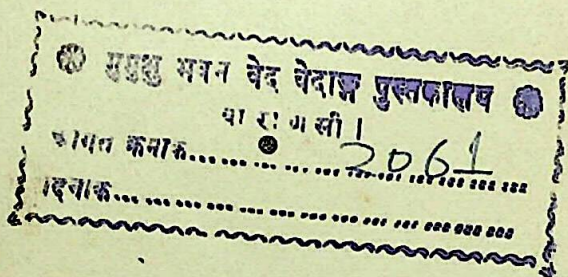


छठी बार : १९६६

मूल्य

~~एक रुपया~~

संशोधित मूल्य ५५०



मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
क्वींस रोड, दिल्ली

32

प्रकाशकीय

इस किताब में गांधीजी के जीवन की कुछ घटनाएं दी हैं। गांधीजी छोटी-छोटी बातों में भी कितने सावधान रहते थे, दूसरों का कितना ध्यान रखते थे, उनमें हिम्मत कितनी अधिक थी, वह कमखर्ची में किस तरह काम चलाते थे, आदि-आदि बहुत-सी बातें हैं, जो कहानियों के रूप में इसमें पढ़ने को मिलेंगी।

इन घटनाओं से हम सबको शिक्षा लेनी चाहिए। आदमी बड़े-बड़े काम करके बड़ा नहीं बनता, बल्कि छोटे-छोटे कामों को अच्छी तरह से करके ही बड़ा बनता है।

आशा है, यह पुस्तक आपको अच्छा मनुष्य बनने और निष्ठा के साथ अपने कर्तव्य का पालन करने की प्रेरणा देगी।

—मंत्री

बापू की बातें

: १ :

मार्च १९४७ में बापूजी बिहार में काम कर रहे थे । करने या मरने की बाजी लगी हुई थी । इसी समय एकाएक वायसराय ने उनको बुला भेजा । बात जरूरी थी, इसलिए हवाई जहाज से आने का अनुरोध किया । लेकिन बापू नहीं माने । वह बोले, “जिस सवारी में करोड़ों गरीब लोग सफर नहीं कर सकते, उसमें मैं कैसे बैठूं ?”

उन्होंने रेल के तीसरे दरजे से ही जाने का तय किया । यही नहीं, उन्होंने मनुबहन को बुलाया और कहा, “मेरे साथ सिर्फ तुमको चलना है, सामान भी कम-से-कम लेना और तीसरे दर्जे का एक छोटे-से-छोटा डिब्बा देख लेना ।”

सामान तो मनुबहन ने कम-से-कम लिया, लेकिन डिब्बा जो चुना, वह दो भागोंवाला था । एक में सामान रखा और दूसरा बापू के सोने-बैठने के लिए रहा । ऐसा करते समय मनुबहन को बापू के आराम का विचार रहा । हर स्टेशन पर भीड़ होगी । फिर

हरिजनों के लिए पैसा जमा करना होता है। उसपर रसोई का काम भी उसी कमरे में होगा। बापू घड़ी-भर भी आराम न कर सकेंगे। यही बातें उसने सोचीं।

पटना से गाड़ी सुबह साढ़े नौ बजे रवाना हुई। गर्मी के दिन थे। उन दिनों बापू १० बजे भोजन करते थे। भोजन की तैयारी करने के बाद मनुबहन बापूजी के पास आई। वह लिख रहे थे। देखकर पूछा, “कहां थी?”

मनु बोली, “उधर खाना तैयार कर रही थी।”

बापू ने कहा, “जरा खिड़की के बाहर तो नज़र डाल।”

मनु ने सुनकर सोचा—जरूर कोई भूल हो गई है। जब बाहर भांका तो देखा, कई लोग दरवाजा पकड़े लटक रहे हैं। वह सबकुछ समझ गई। बापू ने उसे एक मीठी-सी झिड़की दी और पूछा, “इस दूसरे कमरे के लिए तुमने कहा था?”

मनु बोली, “जी हां, मेरा खयाल था कि अगर इसी कमरे में सब काम करूंगी तो आपको तकलीफ होगी?”

बापू ने कहा, “कितनी कमजोर दलील है! इसी-का नाम है अंधा प्रेम। यह तो तुमने सिर्फ दूसरा कमरा मांगा है, लेकिन अगर सैलून भी मांगती तो वह भी मिल जाता। मगर क्या वह तुमको शोभा देता? यह दूसरा कमरा मांगना भी सैलून मांगने के बराबर है।”

बापू ने और भी बहुत-सी बातें कहीं। वह कह रहे थे और मनु की आंखों से पानी भर रहा था। यह देखकर बापू बोले, “अगर तुम मेरी बात समझती हो तो आंखों में यह पानी नहीं आना चाहिए। जाओ, सब सामान इस कमरे में ले लो। अगले स्टेशन पर स्टेशन-मास्टर को बुलाना।”

मनुबहन ने उसी समय सामान वहां से हटा लिया। वह अब भी थर-थर कांप रही थी। वह सोच रही थी कि न जाने बापू आगे क्या करेंगे? कई बार तो वह दूसरों की भूलों को अपनी भूल समझ लेते थे। उनके लिए उपवास करते थे। कहीं इस भूल के लिए भी वह ऐसा न कर बैठें ! मन में यही धुड़क-पुड़क मची हुई थी।

आखिर स्टेशन आया। स्टेशन-मास्टर आये। बापू ने उनसे कहा, “यह लड़की मेरी पोती है। बेचारी भोली-भाली है। शायद अभी मुझे समझी नहीं, इसी-लिए दो कमरे छांट लिये। यह दोष इसका नहीं है, मेरा है। मेरी सीख में कुछ कमी है।”

इस तरह दुःख प्रकट करते हुए बापू ने आखिर में उनसे कहा, “हमने दूसरा कमरा खाली कर दिया है। जो लोग बाहर लटक रहे हैं, उनको उसमें बैठाइये। तभी मेरा दुःख कम होगा।”

स्टेशन-मास्टर ने बहुत समझाया, मिन्नतें कीं, पर बापू टस-से-मस न हुए। आखिर स्टेशन-मास्टर बोले, “मैं उनके लिए दूसरा डिब्बा लगवाये देता हूं।”

बापू ने कहा, “हां, दूसरा डिब्बा तो लगवा ही दीजिये, मगर इसका भी उपयोग कीजिये। जिस चीज की जरूरत न हो उसका उपयोग करना हिंसा है। आप सहूलियतों का दुरुपयोग करवाना चाहते हैं! लड़की को बिगाड़ना चाहते हैं!”

बेचारा स्टेशन-मास्टर! लाज से उसकी गरदन गड़ गई। उसे बापू का कहना मानना पड़ा।

लोग लटकते हुए सफर करें और वह आराम से बैठें, यह बापू कैसे सह सकते थे!

: २ :

बापू मगनवाड़ी में ठहरे हुए थे। एक दिन एक युवक उनसे मिलने आया। उसकी आयु लगभग १८ साल की होगी। उसे कांपने का रोग था। उसके हाथ-पैर कांपने लगते तो रुकते ही न थे। उस कंपकंपी को रोकना उसके वश में नहीं था। उसने बापूजी से कहा, “मैं किसीके काम नहीं आ सकता। मेरा जीवन एक बोझ बन गया है। मुझे आप अपने पास रख लें।”

बापू बोले, “मैं हर अपाहिज को अपने साथ कैसे

रख सकता हूं ? यह मेरे लिए मुमकिन नहीं है । आप कहीं और आसरा खोजें ।”

पर उस युवक ने बापू की बात न मानी । किसी भी तरह वह वहां से जाने को राजी नहीं हुआ । शाम तक बराबर के मकान की सीढ़ियों पर बैठा रहा । शाम को एक भाई ने इस बात की सूचना बापूजी को दी । उसने यह भी सुझाया कि उस युवक को निकाल बाहर किया जाय ।

इतना सुनना था कि बापू बोल उठे, “यदि मैं उसे निकाल बाहर करूं तो आखिर वह किसके पास जायगा ? रहने दो बेचारे को । मैं सोचकर उसके लायक काम बता दूंगा ।”

युवक वहीं रह गया । बापू ने उसे साग-सब्जी धोने का काम सौंपा । शुरू में वह यह काम भी नहीं कर सकता था, लेकिन वह हारा नहीं । लगा रहा । उसमें काम करने की बड़ी तेज चाह थी । कुछ ही दिनों में अपने हाथ में चाकू लेकर साग काटने लगा । धीरे-धीरे उसके मन में अपनी नसों को वश में रखने की ताकत बढ़ती गई । कुछ महीनों में वह ठीक हो गया । बाद में पढ़ने के लिए वह अमरीका चला गया ।

किसीके भीतर के गुणों को सहानुभूति और प्यार

से बाहर लाना बापू खूब जानते थे ।

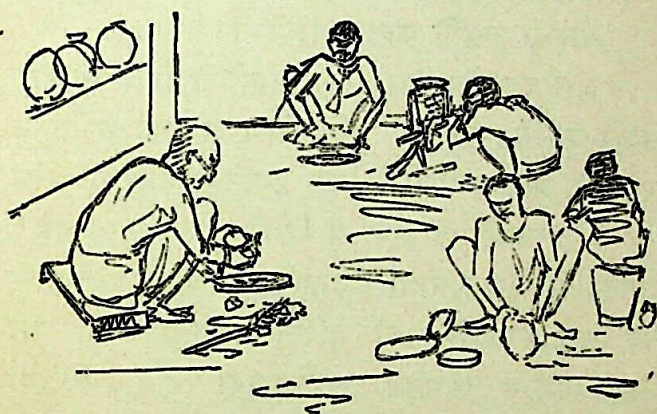
: ३ :

सन् १९०६ की बात है । बापू अफ्रीका में लड़ रहे थे । महात्मा नहीं बने थे, वैसे नाम काफी फैल चुका था । इन्हीं दिनों वह लंदन गये । वहां भारत के बहुत-से नवयुवक थे । वे वहां पढ़ते थे । उनमें से कुछ बड़े खतरनाक समझे जाते थे । वे भारत की आजादी की बात करते थे । उनकी एक सभा थी । सावरकर उसके प्रधान थे । उन्हीं दिनों भारत के कई चोटी के नेता भी वहां थे । इस बात का लाभ उठाकर उन युवकों ने एक जलसा करने का विचार किया । सारे ब्रिटेन में भारत के युवक फैले हुए थे । वे सब इकट्ठे हुए । जलसे का कार्यक्रम बड़ा सीधा था । पहले भोज, फिर भाषण । उसके लिए एक होटल तय कर लिया गया ।

यह सब तो ठीक हो गया, लेकिन सभापति कोई नहीं मिला । भारत के सभी नेताओं ने मना कर दिया । आखिर गांधीजी तैयार हुए, लेकिन एक शर्त के साथ । वह यह कि भोज में मांस नहीं होगा । वह उसी प्रकार होगा, जैसे भारत में होता है ।

युवकों ने यह शर्त मान ली । उन्होंने एक हाल किराये पर लिया । सब जरूरी चीजें खरीदीं और खुद

काम में जुट गये । किसीने वरतन संभाले, किसीने चूल्हा । कोई तरकारी काटने पर लगा तो कोई पकवान बनाने पर । किसीने परोसने का भार लिया तो किसीने सजाने का । वे सब युवक भारत के अलग-अलग भागों के रहनेवाले थे । एक दूसरे को पहचानते भी न थे । पर वे सब अपने देश को पहचानते थे, उसे प्यार करते थे । उन्हींके बीच में एक दुबला-पतला हिंदुस्तानी था । था वैसे खुशदिल और फुरतीला । अपने-आप



उनके बीच एक दुबला-पतला हिंदुस्तानी था, जिसने साग काटने का काम संभाल लिया

उसने थालियां मांजने और तरकारियां काटने का काम

संभाल लिया । कई घंटे बीत गये, पर वह काम में लगा रहा । दोपहर हो आया था, शाम होगई । किसी-को समय का पता ही नहीं रहा ।

आखिर सभा के उपप्रधान वहां आये । सहसा उनकी नज़र उस दुबले-पतले हिंदुस्तानी पर जा पड़ी । यह क्या ? वह तो आंखें फाड़े उसे देखते रह गये । मुंह से बोल नहीं निकला । आस-पास जो युवक थे, वे चौंके । सबके दिलों में तरह-तरह के विचार उठने लगे । एक ने साहस करके पूछा, “कौन है ?”

धीरे-से उन्होंने कहा, “गांधीजी ।”

जैसे वह हॉल हिल उठा । गांधीजी जो आज हमारे सबसे बड़े मेहमान हैं ! जो दक्षिण अफ्रीका के महान् पुरुष हैं, वह गांधीजी चुपचाप हमारे साथ बरतन मांज रहे हैं, तरकारी छील रहे हैं ! सारे युवक दंग रह गये । उनका दिल भर आया । उन्होंने हाथ जोड़कर गांधीजी को काम करने से रोका, लेकिन वह नहीं रुके । उसी तरह काम में लगे रहे । उन्होंने खाना परोसा, थालियां लगाईं, और फिर सभापति बनकर भाषण भी दिया ।

: ४ :

एक बार बापू दिल्ली से वर्धा जा रहे थे । राज-कुमारी अमृतकौर उनके साथ थीं । गांधीजी ने उनसे

कहा था कि वह शाम का खाना गाड़ी में ही खायेंगे। इसके लिए गरम दूध और गरम पानी साथ ले जाना जरूरी था। राजकुमारी के पास केवल एक थरमस था। दूसरा टूट गया था। एक में गरम दूध और गरम पानी एक साथ कैसे आवे ? किसी तरह श्री धनश्याम-दास बिड़ला को इस कठिनाई का पता चल गया। एक दिन पहले वह नया थरमस खरीदकर लाये थे। वही उन्होंने राजकुमारी को दे दिया। राजकुमारी को जरूरत थी, ले लिया। कठिनाई हल होगई।

खाने के समय बापू ने उस थरमस को देखा। उनकी नजर बड़ी पैनी थी। झट भांप गये कि यह नई चीज आई है। पूछा, “तुमने यह नया थरमस खरीदा है?”

राजकुमारी ने जवाब दिया, ‘जी नहीं, यह तो बिड़लाजी ने दिया है।’

फिर सारी कहानी सुना दी। उसे सुनकर गांधीजी को बड़ा दुःख हुआ। बोले, “तुम इतनी गरीब हो ? दूसरों का पैसा खर्च करवाती हो। मान लिया, उनके पास बहुत पैसा है, पर यह कोई बात नहीं है। तुमको कुछ अधिक समझदारी से काम लेना चाहिए। भगवान ने उनको पैसा दिया है। वह उसे धरोहर मानें। उसमें से एक कौड़ी किसी गैर-जरूरी चीज पर न खरचें।”

और वह यहीं चुप नहीं रह गये । महादेवभाई बापस लौटनेवाले थे । उनको वह थरमस दिया और कहा कि इसे बिड़लाजी को लौटा दें ।

: ५ :

कुमारप्पा को खून के दबाव की बीमारी हुई । जांच कराने के लिए वह बंबई गये । कई दिन तक जांच होती रही, कुछ पता न लगा । आखिर डाक्टरों ने कहा, “शरीर ठीक काम कर रहा है । यह शिकायत केवल कमजोरी के कारण है ।”

कुमारप्पा बापू के पास लौट आये । बापू चुप बैठनेवाले नहीं थे । कमजोरी के कारण की खोज करने लगे । जबतक इस कारण का पता न लगेगा तबतक ठीक इलाज नहीं होगा तो बीमारी दूर नहीं होगी ।

उन दिनों एक बहन वहां आई हुई थीं । वह कुछ सवालों को लेकर बातचीत करना चाहती थीं । सवाल कुछ टेढ़े थे । बापू ने उस बहन को कुमारप्पा के पास भेज दिया । साथ ही बातचीत करने से पहले और बाद में उनके खून के दौरे की जांच करवाई । पता लगा कि खून का दबाव १५ डिग्री बढ़ गया ।

दूसरे दिन बापू ने लकड़ी का एक तख्ता मंगवाया ।

उसपर एक लकीर खिंचवाई । फिर कुमारप्पा से कहा, “इस लकीर पर आरी चलाइये । इधर-उधर नहीं ।” उन्होंने ऐसा ही किया । उस दिन भी आरी चलाने से पहले और बाद में खून के दौरे की जांच की गई । काम के बाद खून का दबाव २० डिगरी बढ़ा हुआ मिला ।

तीसरे दिन कुमारप्पा को कुछ दूर दौड़ाया गया । पहले दो दिन की तरह उस दिन भी खून की जांच हुई । पता लगा, दौड़ के बाद खून का दबाव १५ डिगरी उतर गया है ।

बस, अब वापू को असली बात का पता लग गया । वह समझ गये कि खून के दबाव का कारण शरीर की कमजोरी नहीं है । ऐसा होता तो दौड़ के बाद भी दबाव बढ़ता । इसका कारण असल में दिमाग की कमजोरी है । तभी तो वहस और एक ही लाइन पर आरी चलाने के बाद दबाव बढ़ा । इसके बाद गांधीजी को इलाज कराने का रास्ता भी सूझ गया । वह कुमारप्पा से बोले, “अब जब कभी दबाव बढ़े तो आप घूमा करें । लगातार देर तक काम करने की आदत छोड़ दें । बीच में थोड़ा आराम कर लिया करें । भोजन का समय बदल लें । उसके पचने का और दिमाग का काम एक साथ शुरू न हो । इस तरीके से आप बीमारी पर बहुत-कुछ काबू पा सकेंगे ।”

: ६ :

एक बार एक भाई बापू से मिलने आये । वह कुछ फल लाये थे । उनमें चीकू भी थे । बापू जानते थे कि महादेवभाई को चीकू बहुत पसंद है । उस समय वह वहां नहीं थे । बापू ने तुरन्त दो बड़े-बड़े चीकू उठाये । एक भाई से बोले, “ये महादेव को दे आओ ।”

वह भाई उसी समय महादेवभाई को खोजने चले । मिले तो चीकू उनको दिये । चीकू देखकर महादेवभाई सचमुच बहुत खुश हुए । जब उनको पता लगा कि बापू ने भेजे हैं, तब तो उनकी आंखों में पानी भर आया । सोचने लने, बापू उनका कितना ध्यान रखते हैं !

×

×

×

काका कालेलकर को तपेदिक हो गई थी । वह पूना के पास सिंहगढ़ में रहने लगे । कुछ दिन में सेहत सुधर गई । वह फिर आश्रम में लौट आये ।

उनके वहां पहुंचने के कुछ मिनट बाद ही एक लड़की उनके पास आई । उसके पास एक थाली थी । थाली में ताजे-ताजे फूल थे । उनमें से भीनी-भीनी खुशबू उठ रही थी । काका बड़े खुश हुए । पूछा, “किसने भेजे हैं ?”

लड़की ने जवाब दिया, “बापू ने ।”

काका की आंखें भर आईं, बोले, “बापू ने मेरे लिए फूल भेजे हैं ?”



काका की आंखें भर आईं। बोले, “बापू ने मेरे लिए फूल भेजे हैं।”

लड़की ने कहा, “जीहां ! बापू ने कहा है कि रोज इसी तरह काका के पास फूल पहुंचाती रहो। काका को फूलों से बहुत प्यार है।”

: ७ :

कोचरब-आश्रम में सब लोग सब काम अपने-आप करते थे। पानी आप ही भरते थे। बापू भी भरते थे। सड़क की दूसरी तरफ एक कुआ था। वहीं से भर-

कर लाते थे ।

एक रात बापू देर तक काम करते रहे । सवेरे देर तक आटा पीसा । इससे थकान और नींद के कारण सिर में दर्द होगया । लोगों ने कहा, “आप आराम करें । पानी की फिकर न करें । हम भर लेंगे ।” पर बापू कब माननेवाले थे ! कुएं पर आ डटे । तब एक भाई चुपचाप आश्रम में गये । वहां से सब छोटे-मोटे बरतन उठा लाये । साथ में सब बालकों को बुला लाये । अब वह पानी खींचते, बरतन भरते और झटपट उठाकर किसी बालक को दे देते । बापू की बारी टाल जाते । बालक ठहरे शरारती । वे उन भाई का खेल समझ गये । दौड़-दौड़कर उनके पास जाने लगे । कहते, “पहले मुझे दो” और झपटकर ले जाते ।

इस तरह देर तक बेचारे बापू की बारी नहीं आई । आखिर वह भी समझ गये कि यहां दाल न गलेगी । तब वह आश्रम में बरतन ढूंढने गये । वहां क्या रखा था ! पर बापू ढूंढते ही रहे । एक तरफ छोटे बालकों के नहाने का टब पड़ा था । वही दिखाई दे गया । उसी को उठाकर कुएं पर ले आये । बोले, “इसे भर दो ।”

उन भाई ने बापू को देखा । समझ गये कि इनसे पार पाना कठिन है । फिर भी बोले, “इसे आप कैसे

उठावेंगे ?”

बापू ने जवाब दिया, “तुम भर तो दो । फिर देखना कैसे उठाता हूं ।”

उन भाई ने चुपचाप एक घड़ा भरकर बापू के सिर पर रख दिया । इसीमें खैर थी ।

: ८ :

नोआखाली में बापू पैदल गांव-गांव घूम रहे थे । वह दुखियों के आंसू पोंछते थे । वह उनको जीने की हिम्मत देते थे । इसीलिए उस आग में वह खुद अकेले घूम रहे थे । अपने साथियों को भी उन्होंने अकेला छोड़ दिया था । वह सबके मन से डर को निकाल देना चाहते थे । कहते थे कि जो डरेगा वह जियेगा कैसे ?

वहीं घूमते-घूमते एक दिन बापू नारायणपुर पहुंचे । मनुबहन उनके साथ थी । वह उनकी चीजों की देखभाल करती थी । खाना बनाती थी । नारायणपुर आकर उन्होंने देखा कि खुरदरा पत्थर कहीं नहीं मिल रहा है । शायद मनु उसे पिछले गांव में भूल आई है । नहाते समय बापू साबुन कभी नहीं लगाते थे । उसी खुरदरे पत्थर को काम में लेते थे । वह मीराबहन ने उनको दिया था । उसीको मनु भूल आई थी । उसने बापू से कहा, “बापूजी, आपका पत्थर कहीं भूल आई । कल जुलाहे के घर ठहरे थे न, शायद वहीं रह गया है ।

अब क्या करूं ?”

बापू थोड़ी देर तक सोचते रहे। फिर बोले, “तुमने भूल की है। अब तुम खुद जाओ और उस पत्थर को ढूँढ़कर लाओ। मगर अकेली जाना।”

सुनकर मनुबहन सकपका गई। मन में डर लगा। झिझकते हुए बापू से पूछा, “बापूजी, इस गांव में बहुत-से स्वयंसेवक हैं। किसीको साथ ले जाऊं ?”

बापू ने सवाल किया “क्यों ?”

मनुबहन को गुस्सा आगया। बापू सबकुछ जानते हैं, फिर भी पूछते हैं। नारियल और सुपारी के वहां घने जंगल हैं। अनजान आदमी तो उनमें खो जाय। फिर वे तूफान के दिन थे। आदमी आदमी की गला काटता था। आदमी आदमी की लाज लूटता था। राह एकदम वीराना और उजाड़ थी ! उसपर कोई अकेले कैसे जाय ! मगर भूल जो हुई थी ! पत्थर तो जरूर लाना था और बिना जाये वह कैसे आवे ?

मनुबहन ने ‘क्यों’ का जवाब नहीं दिया। गुस्से में भरी हुई चल पड़ी। किसीको साथ नहीं लिया। दिल में वह डर रही थी। कांप रही थी। कहीं से कोई निकल आये तो !... कोई कुछ करे तो !... पर उसके कदम नहीं रुकते थे। वह उसी राह पर जा रही थी,

जिससे यहां आई थी। पैरों के निशान देखती जाती थी। राम नाम लेती जाती थी और आगे बढ़ती जाती थी।

आखिर वह उस जुलाहे के घर पहुंच गई। उस घर में केवल एक बुढ़िया रहती थी। उससे पूछा। वह कुछ न बता सकी। शायद उसने उस पत्थर को फेंक दिया था। वह बेचारी उसकी कीमत नहीं जानती थी। मनु इधर-उधर ढूंढ़ने लगी। कुछ देर बाद आखिर वह मिल गया।

खुशी-खुशी मनु नारायणपुर लौटी। एक बज रहा था। जोर की भूख लग आई थी। बापू को पत्थर देते समय वह रो पड़ी।

बापू बोले, “देखो, आज तुम्हारी परीक्षा हुई। भगवान जो करता है, भले के लिए करता है। इस परीक्षा में तुम पास हुई, इसकी मुझे खुशी है। यह पत्थर मेरा पच्चीस साल का साथी है। जेल में, महल में, जहां भी मैं जाता हूं, यह मेरे साथ रहता है। अगर यह खो जाता तो मुझे और मीराबहन को बड़ा दुःख होता। तुमने आज एक पाठ सीखा। ‘ऐसे पत्थर बहुत मिल जायेंगे’ दूसरा ढूंढ़ लेंगे’ इस खयाल से बेपरवाह नहीं होना चाहिए। काम की हर चीज को संभालना सीखना चाहिए।”



“काम की हर चीज को संभालना सीखना चाहिए।”

: ६ :

नोआखाली की पगडंडियां बड़ी सकरी थीं। कहीं-कहीं तो दो आदमी भी साथ नहीं चल सकते थे। बापू को ऐसी जगह अकेले चलना पड़ता था। सहारे को

वह एक लकड़ी रखते । यहांतक तो खैर थी । पर वे रास्ते गंदे भी बहुत थे । जगह-जगह थूक और मल वगैरा पड़ा रहता था । उसको देखकर वह बड़े दुखी होते । उसके बीच उन्हें नंगे पैर चलना पड़ता था ।

एक दिन चलते-चलते वह रुके । सामने मैला पड़ा था । उन्होंने आसपास से सूखे पत्ते बटोरे । फिर अपने हाथ से वह मैला साफ कर दिया । गांव के लोग देखते-के-देखते रह गये । मनुबहन कुछ पीछे थी । पास आकर यह नजारा देखा । हैरान रह गई । गुस्से में बापू से कहा, “बापू, आप मुझे क्यों शरमिदा करते हैं । मुझसे क्यों नहीं कहा ? खुद ही क्यों साफ किया ?”

बापू हँसकर बोले, “तुम नहीं जानती । ऐसे काम करके मुझे कितनी खुशी होती है । तुमसे कहने के बजाय खुद करने में कम तकलीफ है ।”

मनु ने कहा, “मगर गांव के लोग तो देख रहे हैं ।”

बापू बोले, “आज की इस बात से लोगों को सबक मिलेगा । कल से मुझे इस तरह गंदे रास्ते साफ न करने पड़ेंगे । यह कोई छोटा काम नहीं है ।”

मनु ने कहा, “मान लीजिये, गांववाले कल तो रास्ता साफ कर दें, फिर न करें । तब ?”

बापू ने तुरन्त जवाब दिया, “तब मैं तुमको देखने के लिए भेजूंगा । अगर राह इस तरह गंदी मिली तो मैं फिर साफ करने के लिए आऊंगा ।”

दूसरे दिन सचमुच बापू ने मनु को देखने भेजा । रास्ता उसी तरह गंदा था । लेकिन मनुबहन बापू से कहने के लिए नहीं लौटी । खुद उसे साफ करने लगी । गांववालों ने देखा तो शर्मिंदा हुए और वे भी साथ आ जुटे । यही नहीं, उन्होंने वचन दिया कि आगे से हम अपने-आप साफ कर लेंगे ।

वापस लौटकर मनु ने सब कहानी बापू को सुनाई । बापू बोले, “अरे, यह तो मेरा पुण्य तुमने ले लिया । यह रास्ता तो मुझे साफ करना था । खैर, दो काम हुए । एक तो सफाई रहेगी । दूसरे, अगर लोग वचन पालेंगे तो सचाई का सबक मिल जायगा ।”

: १० :

दक्षिण अफ्रीका में बहुत-से लोगों ने गांधीजी के साथ काम किया था । उनमें एक थे थंबी नायडू । इन भाई ने अपने लड़के भी गांधीजी को सौंप दिये थे । कुछ दिन के बाद इनमें से एक लड़का बहुत बीमार होगया । बेचारा दवा कर-करके हार गया, लेकिन बीमारी दूर न हुई । उन दिनों गांधीजी भारत में

आश्रम बनाकर रहने लगे थे । लड़का वहीं आगया । वह चाहता था कि मरूं तो गांधीजी की गोद ही में मरूं । आश्रम में सब लोग उसकी सेवा करते थे । गांधीजी भी करते थे । सब बारी-बारी से उसके पास बैठते थे । गांधीजी अपनी बारी के अलावा भी उसे देखने आते थे । एक दिन रात को बारह बजे गांधीजी की बारी पूरी हुई । उनकी जगह एक और भाई बैठे । उस दिन लड़के की हालत बहुत खराब थी । गांधीजी ने उन भाई से कहा, “मुझे एक घंटे बाद जगा देना ।” और वह जाकर लेट गये । कुछ मिनट बाद वह भाई उधर गये । देखा कि गांधीजी गहरी नींद में सो रहे हैं । उन्हें बड़ा अचरज हुआ । बीमार की गांधीजी को इतनी चिंता थी; फिर भी उनको इतनी गहरी नींद आ गई । उसकी समझ में यह बात नहीं आई ।

आखिर एक घंटा पूरा होने को आया । वह भाई बापू को जगाने की बात सोचने लगे । तभी सहसा गांधीजी उठ बैठे । उठते ही पूछा, “क्यों वक्त पूरा हुआ न ?”

उन भाई ने जवाब दिया, “जी हां ।”

गांधीजी बोले, “एक घंटा अच्छी नींद आई ।”

यह कहकर वह फिर बीमार के पास आ बैठे ।

: ११ :

एक बार एक भाई गांधीजी से मिलने आये । वह बहुत अच्छी अंग्रेजी जानते थे । कालेज में थे । वह मानते थे कि बढ़िया अंग्रेजी में लेख लिखना देश की सेवा करना है । यह बड़ी पुरानी बात है । आश्रम तब बना ही था । इन भाई ने गांधीजी से कहा, 'मेरे लायक कोई काम हो तो बताइये ।'

उनका विचार था कि गांधीजी उनसे अंग्रेजी में लेख लिखने को कहेंगे, पर बात कुछ और ही हुई । उस समय गांधीजी गेहूं साफ कर रहे थे । उन्होंने कहा, "वाह, यह तो बहुत अच्छी बात है । ये गेहूं बीनने हैं । आप मदद करेंगे ?"

वह भाई सकपका गये । बुरा भी बहुत लगा, पर मना कैसे करते ? मन मारकर बोले, "जरूर मदद करूंगा ।"

वह गेहूं बीनने लगे । ऊपर से वह शांत थे, पर मन में सोच रहे थे कि कहां आ फंसा ? कैसी मुसीबत है ? कैसे हैं गांधीजी ! बढ़िया अंग्रेजी जाननेवाला गेहूं बीने ! खैर, राम-राम करके कोई एक घंटा पूरा किया । फिर गांधीजी के पास गये, बोले, "बहुत समय हो गया । अब जाना चाहता हूं ।"

गांधीजी ने पूछा, “बस घबरा गये ?”

वह सचमुच घबरा गये थे, पर कहते कैसे! बोले,
“नहीं-नहीं, घबराया नहीं।”

गांधीजी ने कहा, “तो घर जल्दी पहुंचना है ?”

वह बोले, “जी हां, जरूरी काम है।”

गांधीजी ने पूछा, “क्या काम है ?”

वह भाई बोले, “जी, रात को खाने में देर हो जाती है। इससे शाम को नाश्ता कर लेता हूं। उसीका समय हो रहा है।”

गांधीजी हँस पड़े। बोले, “इसके लिए घर जाने की कोई जरूरत नहीं है। हमारा भोजन भी बस तैयार होनेवाला है। हमें भी एक बार अपने साथ भोजन करने का मौका दीजिए। हमारी नमक-रोटी आपको पसंद होगी न ? मैं काम में लगा हुआ था। आपसे बातें नहीं कर सका। माफ करें। अब खाते समय बातें भी कर लेंगे।”

वह भाई क्या करते ? रुकना पड़ा। कुछ देर में खाने का समय होगया। भोजन एकदम सादा, रूखी रोटी, चावल, तरकारी और दाल का पानी। न घी, न अचार, न मिरच-मसाले। बापू ने उन भाई को अपने पास बैठाया। बड़े प्यार से खाना परोसा। भोजन

शुरू होते ही बातें भी शुरू होगईं । पर उन भाई की बुरी हालत थी । वह ठहरे मेवा-मिठाई से नाश्ता करने-वाले । और वहां थी रूखी रोटी ! एक टुकड़ा मुंह में दें और एक घूंट पानी पियें । तब भी एक रोटी पूरी न खा सके ।

इतने पर भी छुट्टी मिल जाती तो गनीमत थी । वहां तो अपने बरतन आप मांजने का भी नियम था । जैसे-तैसे वह काम भी किया । तब जाने की इजाजत मिली । जाते समय बापू ने उनसे कहा, “आप देश की सेवा करना चाहते हैं, यह तारीफ के लायक बात है । आपकी जानकारी और आपकी सूझबूझ का काफी उपयोग हो सकता है । लेकिन इसके लिए शरीर का नीरोग और मजबूत होना जरूरी है । आप अभी से उसकी तैयारी करें । यही आपका देश-सेवा की ओर पहला कदम होगा ।”

: १२ :

चम्पारन बिहार में है । वहां गांधीजी ने सत्याग्रह की एक शानदार लड़ाई लड़ी थी । निलहे गोरे वहां के लोगों को बड़ा सताते थे । उसीकी वह जांच करने वहां गये थे । उनके काम से जनता जाग उठी । उसका साहस बढ़ गया । इसपर गोरे बड़े परेशान

हुए । वे अबतक मनमानी करते रहे थे । कोई उनकी ओर अंगुली उठानेवाला नहीं था । अब इस एक आदमी ने तूफान खड़ा कर दिया । गोरे आग-बबूला हो उठे । इसी समय एक आदमी ने आकर बापू से कहा, “यहां का एक गोरा बड़ा खराब है ।”

“कैसे ?” बापू ने पूछा ।

“वह आपको मार डालना चाहता है । उसने इस काम के लिए आदमी भी तैनात कर दिये हैं ।”

“सच ?”

“जी हां ।”

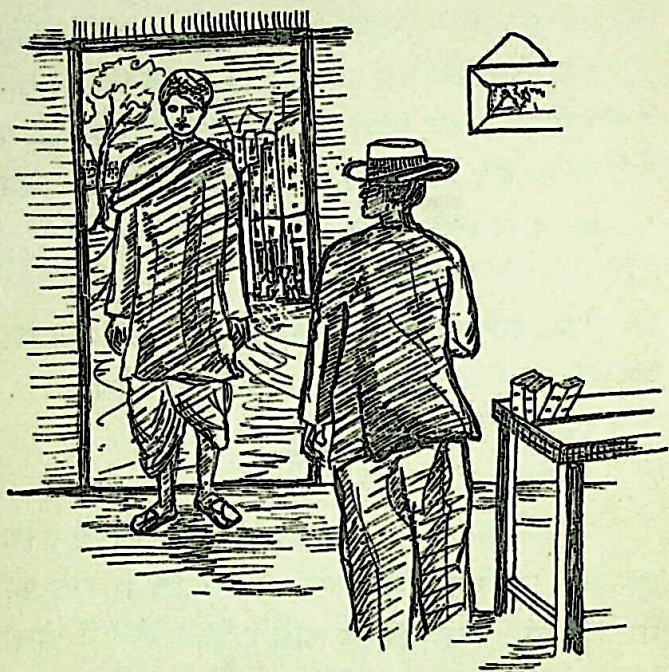
बापू ने बात सुन ली । उसके बाद किया क्या कि एक दिन उस गोरे की कोठी पर पहुंचे । रात का समय था और वह एकदम अकेले थे । गोरे ने देखा तो पूछा, “तुम कौन हो ?”

“गांधी ।”

गोरा हैरान रह गया, “गांधी !”

“हां, मैं गांधी हूं । सुना है, तुम मुझे मारना चाहते हो ? तुमने आदमी भी तैनात कर दिये हैं ।”

गोरा सन्न रह गया, जैसे सपना देख रहा हो । बापू बोले, “मैंने किसीसे नहीं कहा । मैं अकेला आया हूं ।”



बापू बोले, "मैं अकेला आया हूँ।"

बेचारा गोरा हैरान बापू को देखता रह गया।
बोल तक नहीं सका। डर को इस तरह जीतनेवाला
आदमी उसने अबतक कहां देखा था !

: १३ :

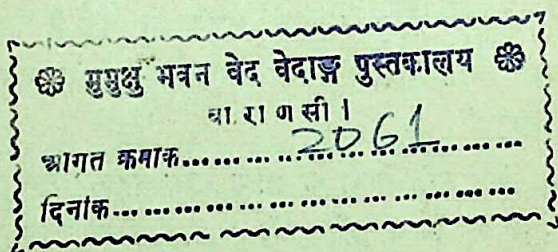
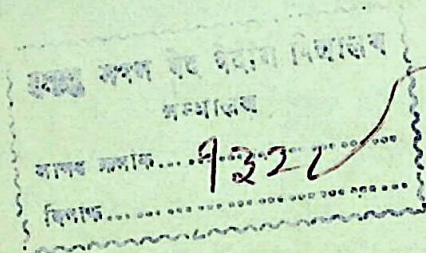
कुछ दिन बापू मगनवाड़ी जाकर कुमारप्पा के
पास रहे थे। मगनवाड़ी में गांव की दस्तकारियां
सिखाई जाती हैं। उन दिनों वहां सबलोग रोज के सब

कामों में भाग लेते थे । रसोई के बरतन तक मांजते थे । एक दिन यह काम करने की बारी गांधीजी की आई । कुमारप्पा उनके साथी थे । दोनों ने कुएं के पास सब बरतनों का ढेर लगाया । फिर नारियल की जटाओं का जूना बनाया । उसे राख और मिट्टी में सानकर बरतनों की कालिख छुड़ाने लगे । बरतन बड़े-बड़े थे । खूब रगड़ना पड़ा । कोहनियों तक हाथ कीचड़ में भर गये ।

इसी समय कस्तूरबा गांधी उधर आ निकलीं । कुछ मिनट तो बुतबनीं वह चुपचाप इस अनोखे नजारे को देखती रहीं । फिर एकाएक बापू पर बरस पड़ीं । बोली, “आप-जैसे आदमी को यह काम शोभा नहीं देता । और बहुत-से काम करने को पड़े हैं । यहां से उठकर जाइये और अपना काम किसी और को करने दीजिए ।”

फिर बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़कर उन्होंने बापू के हाथ से देगची छीन ली । यह सारा काम इतनी फुरती से हुआ कि बापू दंग रह गये । हाथ में जूना लिये वह कुछ देर कुमारप्पा की ओर देखते रहे, फिर हँस पड़े । बोले, “कुमारप्पा, तुमने शादी नहीं की । तुम सुखी हो । तुम किसीके ताबेदार नहीं, पर मुझे तो

घर में अमन रखना है। इनका कहना मानना ही पड़ेगा। अच्छा भाई, माफ करना। अब ये ही मेरी जगह बरतन मांजेंगी। मैं चला।”



गांधी जी विषयक साहित्य

गांधी : व्यक्तित्व, विचार और प्रभाव

गांधी : संस्मरण और विचार

गांधी जी को श्रद्धांजलि

राष्ट्रपिता

बापू की कारावास-कहानी

बापू के आश्रम में

बा, बापू और भाई

जीवन-प्रभात

डायरी के पन्ने

गांधी : एक जीवनी

गांधी और उनके सपने

मेरे हृदयदेव

गांधी जी का जीवन प्रभात

श्रद्धांजलि

बापू की बातें

विचार-धारा-संबंधी

स्वतन्त्रता की ओर

गांधी-विचार-दोहन

अहिंसा की कहानी



पचास पैसे